यदि आप सबसे पहले अपनी पहचान और प्राथमिकता का सम्मान करते हैं, तो आपका जीवन धन्य और संतुलित होगा।
- स्टेल एम. नेल्सन

अमेरिकी धार्मिक नेता

इमरान सरकार ने भारत के साथ राजनयिक रिश्ता सीमित करने और द्विपक्षीय व्यापार को बंद करने का जो कदम उठाया है, वह उसकी बौखलाहट को ही दिखाता है। पूर्व प्रधानमंत्री वाजपेयी ने ठीक ही कहा था कि आप दोस्त तो बदल सकते हैं, पड़ोसी नहीं।

पाकिस्तान की बौखलाहट

जम्मू-कश्मीर को विशेष दर्जा देने वाले संविधान के अनुच्छेद 370 को निष्प्रभावी करने पर पाकिस्तान ने भारतीय उच्चायुक्त को निष्कासित कर और द्विपक्षीय व्यापार को स्थगित कर जैसी प्रतिक्रिया व्यक्त की है, उसका अंदेशा पहले से था। उसने समझौता एक्सप्रेस को रद्द करने की भी एकतरफा घोषणा की है, अलबत्ता उसने साफ किया है कि वह अपना हवाई क्षेत्र भारतीय उड़ानों के लिए बंद नहीं कर रहा है। ऐसा लगता है कि उसे न तो जमीनी हकीकत का एहसास है और न ही अतीत से उसने कुछ सबक लिया है। पाकिस्तान के हुक्मरान अपने आंतरिक संकटों से उबरने के लिए जब भी मौका मिलता है, कश्मीर मुद्दे का अंतरराष्ट्रीयकरण करने की कोशिश करते हैं, यह उनका पुराना राग है। इसके बावजूद भारत ने संयम का परिचय देते हुए उससे अपने निर्णय पर पुनर्विचार करने का आग्रह किया है। वास्तव में भारत और पाकिस्तान के बीच द्विपक्षीय व्यापार इतना है ही नहीं, कि उसे बंद करने से भारत के हितों को चोट पहुंचे। यही नहीं, पुलवामा में भारतीय सुरक्षा बल के काफिले पर हुए हमले के बाद भारत ने पाकिस्तान से तरजीही देश का दर्जा हटाकर दो सौ वस्तुओं पर शुल्क भी बढ़ा दिया था। पाकिस्तान ने इस मुद्दे को संयुक्त राष्ट्र और अंतरराष्ट्रीय न्यायालय जैसे मंचों पर ले जाने की धमकी भी दी है, लेकिन वह भूल रहा है कि भारत ने अपने संविधान की व्यवस्था में ही परिवर्तन किया है, जिससे पाकिस्तान समेत किसी भी अन्य देश का कोई लेना-देना नहीं है। भारतीय विदेश मंत्रालय ने अपने बयान में साफ कहा है कि जम्मू-कश्मीर का विशेष दर्जा विकास के नए अवसर पैदा करने के लिए खत्म किया गया है और यह भारत का आंतरिक मामला है। दरअसल वहां की विषम सामाजिक-आर्थिक परिस्थितियों का ही आतंकवादी और अलगाववादी लाभ उठाते आए हैं। पाकिस्तान की इमरान खान सरकार ने जो एकतरफा कदम उठाया है, उसमें उसकी बौखलाहट ही दिखाई दे रही है। पूर्व प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी ने पाकिस्तान के बारे में ठीक ही कहा था कि आप अपना दोस्त तो बदल सकते हैं, पड़ोसी नहीं। इसके बावजूद आर्थिक संकट से जूझ रहे पाकिस्तान के आज जैसे हालत हैं, उसमें सतर्क रहने की जरूरत है, ताकि वह कोई दुस्साहस न करे।

भारत में सूचना की राजनीति

अपनी हालिया प्रकाशित पुस्तक- *द ट्रुथ अबाउट अस : द पॉलिटिक्स ऑफ इन्फॉर्मेशन फ्रॉम मनु टू मोदी*- में मैंने यह दर्शाया है कि पिछली दो शताब्दी से ज्यादा समय से भारत के सामाजिक सत्य कैसे बनते आए हैं, कि कैसे यह आकार लेता है और इसके राजनीतिक एवं सामाजिक परिणाम क्या हैं। किसी भी समाज के 'सत्य' का निर्माण सूचनाओं के बुनियादी तत्वों के संगठन से होता है। सूचना का संचयन और संगठन 'सत्य' बन जाता है। अब यहां महत्वपूर्ण सवाल है कि सूचना क्या है। यह कैसे पैदा होती है? सही जानकारी के रूप में क्या स्वीकार किया जाता है, किनके द्वारा और क्यों? ये महत्वपूर्ण सवाल सूचना की राजनीति के मूल आधार हैं, जिनमें सत्ता के लोगों की पसंद, कि क्या सूचना है और क्या नहीं, सूचनाओं को समूहों में वर्गीकृत करना, श्रेणियों को भरने के लिए गणना और जिन्हें श्रेणीबद्ध किया गया है, उनसे संचार शामिल होते हैं। इन विकल्पों में से प्रत्येक महत्वपूर्ण है, वर्गीकरण सबसे ज्यादा परिणामदायी है। प्रत्येक चरण पर प्रत्येक विकल्प एक अलग सामाजिक स्थिति के लिए एक अलग रास्ता बनाता है।

भारत की सामाजिक पहचान का मौजूदा विस्तार (यानी कि धर्मों, जातियों और जनजातियों का विस्तार) ऐसे विकल्पों की शृंखला का नतीजा है, जिन्हें सत्ताधारी लोगों ने विभिन्न समय पर चुना है। भारत की सामाजिक सच्चाई के नाम पर हमारे सामने जो कुछ हैं, वे वस्तुनिष्ठ नहीं, बल्कि विषयनिष्ठ हैं। इसे जटिलता को सरल करने और उन लोगों के हितों की सेवा के लिए बनाया गया था, जिन्होंने सत्य रचा। सूचना की राजनीति को तीन मूल तत्व आकार देते हैं- सत्ता, प्रौद्योगिकी और सरलीकरण।

इनमें सत्ता सबसे महत्वपूर्ण है। सत्ता किसके पास है, कितनी है, वह अपनी पसंद को वास्तविकता के रूप में किस प्रभावी तरीके से स्थापित कर सकता है, अपनी पसंद बनाते समय इसके बारे में वह कितना जानता और विश्वास करता है, अपनी पसंद के जरिये वह क्या हासिल करना चाहता है, उसके हित क्या हैं, आदि इस संदर्भ में बेहद महत्वपूर्ण सवाल हैं। 'सूचना ही शक्ति है' एक घिसी-पिटी बात है। सूचना क्या है, यह तय करने की क्षमता, उन्हें वर्गीकृत करना और उनके नाम देना ही सच्ची शक्ति है।

प्रत्येक सूचना का चुनाव एक विशिष्ट तकनीकी दायरे में होता है। नई सूचना प्रौद्योगिकी सूचना की मात्रा और उन लोगों की संख्या, दोनों का विस्तार करती हैं, जो इसे हासिल कर सकते हैं।

संजय चक्रवर्ती

जाति से लेकर राष्ट्रीयता तक और आपराधिकता से लेकर मानसिक क्षमता तक- हर ठप्पा सत्ता में बैठे लोगों द्वारा चुने जाने का परिणाम है, जो उन लोगों पर नियंत्रण और वर्चस्व रखते हैं, जिन पर उन्होंने ठप्पा लगाया है। मसलन, भारत की जनजातीय (आदिवासी) आबादी को हिंदू के रूप में वर्गीकृत करना एक चुनाव है। इसे जनजातीय लोगों ने खुद नहीं गढ़ा है, बल्कि श्रेणी बनाने वाले लोगों द्वारा ऐसा किया गया है। गौर कीजिए कि यह कितना समस्याग्रस्त है। यदि 'जाति' हिंदू समाज की सर्वव्यापी और केंद्रीय विशेषता है, तो भारत के ये आदिवासी हिंदू कैसे हो गए? जब भारत के आदिवासियों को 19वीं सदी के उत्तरार्ध और 20 वीं सदी के प्रारंभ में 'हिंदू' की श्रेणी में रखा गया था, तो उनके बीच कोई ब्राह्मण या क्षत्रिय नहीं था और न ही जाति बहिष्कृत। संस्कृत को हिंदुत्व की संपर्क भाषा माना जाता है, जिसकी आदिवासी समाज में मौजूदगी नहीं थी। वे अलग देवी-देवता की पूजा करते थे, और उनका खानपान अलग था। तो फिर किस चीज ने उन्हें हिंदू बना दिया?

सूचना प्रौद्योगिकी का स्तर भी सूचना गढ़ने, उसके प्रबंधन और उसकी राजनीति के लिए महत्वपूर्ण है। प्रत्येक सूचना का चुनाव एक विशिष्ट तकनीकी दायरे में होता है जो कुछ चीजों को होने देता है और दूसरों को नहीं। नई सूचना प्रौद्योगिकी सूचना की मात्रा और उन लोगों की संख्या, दोनों का विस्तार करती हैं, जो इसे हासिल कर सकते हैं। वह केंद्रित शक्ति को कमजोर करती है, भले ही वह नई सामाजिक संरचना और सामाजिक समस्याएं पैदा करे।

भारत में जब सूचनाएं कड़ हस्तलिखित पोथियों में मौजूद थीं, तब कुछ सुविधाजनक सूचनाएं और उनके व्याख्याकार सूचना निर्माण की प्रक्रिया में प्रमुख हो गए। मेरा मानना है कि इसी तरह हिंदू धर्म बना। लेकिन सूचना प्रौद्योगिकी बाद में कम से कम दो क्रांतियों का साक्षी बनी। प्रिंटिंग प्रेस आया, जिसने ज्यादा लोगों और समूहों को सूचनाओं के निर्माण और उसे प्राप्त करने में सक्षम बनाया। प्रिंटिंग प्रेस भारतीय विचार और राजनीतिक संगठन के गठन और विकास की कुंजी बन गया। इसने सीधे तौर पर दो प्रमुख ताकतों का नेतृत्व किया- उपनिवेश-विरोधी राष्ट्रवाद (तिलक, राय, गांधी, बोस और नेहरू का) तथा हिंदू एकीकरण (सावरकर, गोलवलकर और दीनदयाल उपाध्याय का)। पिछले करीब ढाई दशक से भारत और विश्व डिजिटल और मोबाइल प्रौद्योगिकी द्वारा संचालित एक नई सूचना क्रांति से गुजर रहे हैं। प्रचुर जानकारी और गलत सूचनाओं के इस दौर में प्रौद्योगिकी महत्वपूर्ण हो गयी है, जिसे लोग जानते और मानते हैं।

सूचना के निर्माण और प्रबंधन को मैंने साधारण जानकारी के सिद्धांत के रूप में प्रतिपादित किया है। यह इस स्वयंसिद्ध तथ्य पर आधारित है कि हर जगह के सभी लोग जटिल सूचनाओं पर सरल सूचना को तवज्जो देते हैं। सरल जानकारी को वरीयता देने की बात हमारे दिमाग से उत्पन्न होती है। जानकारी का सरल रूप दोहरा रूप लिए होता है (भोजन या जहर, दोस्त या दुश्मन, पक्ष या विपक्ष) और यह श्रेणियों व आख्यानों पर आधारित होता है। सरल जानकारी को प्राथमिकता व्यक्तिगत या संस्थागत, दोनों तरह से मिलती है। इन सरलीकरणों से निश्चित रूप से रोजमर्रा के भेदभाव और असमानताएं पैदा होती हैं, और युद्ध व नरसंहार जैसे बड़े पैमाने पर हिंसा को भी उचित ठहराया जा सकता है। ये सरल स्टीरियोटाइप और पूर्वाग्रह रोजमर्रा के व्यवहार से जुड़ जाते हैं। वे विभिन्न व्यावहारिक तरीकों से हमारे बारे में सच्चाई बन जाते हैं।

सरल जानकारी का सिद्धांत यह समझने के लिए महत्वपूर्ण है कि कैसे ब्रिटिश उपनिवेशवादियों ने भारत की तत्कालीन सामाजिक संरचना के बारे में कल्पना कर ली थी कि वे पहले भी अस्तित्व में थी। यह भारत में सच के बारे में दो मुख्य दावों- हिंदू एकरूपतावाद और बहुलतावादियों-के बारे में जानने के लिए भी महत्वपूर्ण है, जो इन दिनों आपस में जूझ रहे हैं।

-लेखक टेंपल यूनिवर्सिटी में प्रोफेसर हैं।

अंतर्ध्वनि
>> रवींद्रनाथ टैगोर

प्यार व सम्मान करने की क्षमता ईश्वर का सबसे बड़ा उपहार है

'स्मृतियां' एक अदृष्ट कलाकार की मूल कृतियां हैं। यदि स्मृतियों में बनी छवियों को हम शब्दों का रूप दे सकें, तो वे साहित्य में एक स्थान पाने योग्य हैं। एक आंसू या एक मुस्कान की तरह, कविता उसकी छवि है, जो भीतर घट रहा है। कविता सुनने के बाद जब कोई यह कहता है कि उसे वह समझ नहीं आई, तो मैं आश्चर्यचकित रह जाता हूं। यदि एक फूल को सूंघकर कोई मनुष्य यह कहे कि उसे वह समझ नहीं आया, तो मेरा यही उत्तर होगा—यहां समझने को कुछ भी नहीं है। वह सिर्फ एक सुगंध है। फिर भी यदि वह कहे, मुझे मालूम है, लेकिन इसका अर्थ क्या है? तब किसी एक को संवाद का विषय बदलना होगा या फिर उसके अर्थ अव्यक्त करते हुए मैं कहूंगा, सुगंध सार्वभौमिक आनंद का आकार है, जो कि एक फूल में उपस्थित है। मेरा मानना है कि प्यार और सम्मान करने की क्षमता, मनुष्य को दिया हुआ ईश्वर का सबसे बड़ा उपहार है। किसी भी वस्तु का सही तरीके से उपयोग करना सीखने का एकमात्र तरीका उसके दुरुपयोग से है।

होश में या अनजाने में मैंने ऐसे कई काम किए होंगे, जो असत्य थे। लेकिन मैंने अपनी कविता में कभी भी कुछ भी असत्य नहीं कहा। यह वह अभयारण्य है, जहां मेरे जीवन के सबसे गहरे सत्य शरण पाते हैं। स्वयं को जानना सरल नहीं है। कठिन है जीवन के अनगिनत अनुभवों को एक संपूर्णता में एकीकृत करना। यदि ईश्वर ने मुझे लंबी आयु न दी होती, तो बहुत दुर्लभता से मुझे मेरी आत्म-छवि दिखती। मैंने अपने जीवन के होने का अर्थ अलग-अलग समयों में विभिन्न कार्यकलापों और अनुभवों से स्थापित किया है। अपने बारे में एकमात्र निष्कर्ष जो मैं निकाल पाया हूं, वह यह है—मैं एक कवि हूं, और कुछ भी नहीं। कोई फर्क नहीं पड़ता कि मैंने अपने जीवन के साथ और क्या किया।

-नोबेलजयी भारतीय साहित्यकार

मंजिलें और भी हैं
>> वंदना झा

सिलाई मशीन बन गई रोजगार का जरिया

शादी होने के बाद एक आम गृहिणी की तरह ही मेरा जीवन बीत रहा था। हमारा छोटा परिवार था, मेरे दो बच्चे हैं, जो स्कूल जाते हैं जबकि पति प्राइवेट नौकरी करते हैं। पति के काम पर जाने और बच्चों के स्कूल चले जाने के बाद बचे खाली समय में मेरे पास कोई काम नहीं होता था। घर पर रहते हुए खाली समय में मैं अक्सर समाज के प्रति कुछ अच्छा काम करने के लिए सोचती रहती थी। मैं बिहार के भागलपुर जिले के चंपानगर की रहने वाली हूं।

खाली समय का सही इस्तेमाल करने के लिए मैंने अपने एक परिचित से सलाह ली और उनसे सामाजिक कार्य करने की इच्छा जताई, तो उन्होंने मुझे एक स्वयंसेवी संगठन के साथ जुड़कर काम करने के लिए कहा। मैं उस संगठन के साथ जुड़ गई, पर पांच-छह माह काम करने के बाद मुझे समझ आने लगा कि वह संस्था जो कर रही थी, उससे मेरा लक्ष्य पूरा होने वाला नहीं था, तो उनके साथ काम करना बंद कर दिया। हालांकि मैं दोबारा घर पर बैठ तो जरूर गई थी, पर पूर्व अनुभव से मुझे अपने आसपास कुछ अच्छा करने का एक रास्ता जरूर मिला था। मुझे अपने लक्ष्य तक पहुंचने के लिए दोबारा कहीं से शुरुआत करनी थी। इसके लिए मैंने आसपास के गरीब बच्चों को निःशुल्क शिक्षा देना प्रारंभ किया। चूंकि भागलपुर में कपड़े का, विशेष तौर से सिल्क का उत्पादन होता है, ऐसे में वहां सिलाई का प्रशिक्षण प्राप्त महिला कामगारों की जरूरत वहां रहती है। इसलिए मैंने अपने आस-पास मौजूद गरीब महिलाओं और लड़कियों को सिलाई प्रशिक्षण के माध्यम से हुनरमंद बनाकर उन्हें आर्थिक रूप से मजबूत बनाने पर विचार किया।

मेरा मानना है कि राहत की भीख देने के बजाय लोगों को हुनरमंद बनाने की कोशिश होनी चाहिए।

मैंने दो सिलाई मशीनों के साथ एक केंद्र की शुरुआत की और निःशुल्क प्रशिक्षण देना शुरू किया। शुरुआत में सीखने के लिए कम महिलाएं आईं, पर धीरे-धीरे यह संख्या बढ़ने लगी। कुछ लोगों की सलाह पर मैंने 'अंग मदद फाउंडेशन' के नाम पर एक संगठन का रजिस्ट्रेशन करवाया। महिलाओं की संख्या बढ़ने पर हमारे पास सिलाई मशीनों की कमी पड़ने लगी। ऐसे में दिल्ली, हरियाणा और बिहार के कुछ लोगों ने हमें और सिलाई मशीनें उपलब्ध करवाईं।

फाउंडेशन के बैनर तले चल रहे महिला सशक्तीकरण अभियान के तहत मैं अब तक दो हजार से ज्यादा महिलाओं और लड़कियों को निःशुल्क सिलाई प्रशिक्षण दिला चुकी हूं। साथ ही समय-समय पर मैं गरीब बच्चों को कपड़े और उनकी पढ़ाई-लिखाई में उपयोगी सामान देती हूं। मेरे काम का परिणाम यह है कि मैं इस क्षेत्र के लोगों तक यह संदेश पहुंचाने में कामयाब हुई हूं कि महिलाएं स्वयं अपनी चेतना से प्रेरित होकर न केवल घर का, बल्कि समाज का भी भला कर सकती हैं। मेरे इलाके में करीब 25 साल से एक रोड खराब थी, तमाम आवेदन, निवेदन के बावजूद उसका निर्माण नहीं हो पा रहा था, तो मैंने उसके लिए कई प्रयास किए। अंततः अब वह बननी शुरू हो गई है। मेरा हमेशा से मानना रहा है कि राहत की भीख देने के बजाय लोगों को हुनरमंद बनाने की कोशिश होनी चाहिए। मैं ऐसी हुनरमंद महिलाओं का समूह तैयार करना चाहती हूं जो घरेलू कार्य करने के साथ उत्पादन के काम से जुड़ें और आर्थिक रूप से अपने आप को मजबूत बनाएं। मैं गरीब बच्चों के लिए एक आवासीय विद्यालय स्थापित करने के लिए प्रयासरत हूं। मेरा उद्देश्य महिलाओं को आत्मनिर्भर बनाना हैं। उन्हें निःशुल्क रोजगारोन्मुख प्रशिक्षण अभियान के तहत आत्मनिर्भर बनाना है।

अर्थव्यवस्था को रफ्तार देने का कौशल

सरकार के सकारात्मक इरादों के बावजूद, बेमन से क्रियान्वित सुधारों ने कारोबारी माहौल को बिगाड़ा है। सरकार को न सिर्फ सब्सिडी जैसे संरक्षणवादी उपायों पर फिर विचार करने की आवश्यकता है, बल्कि कुछ मामलों में अधिनियम को भी परखने की जरूरत है।

राजीव मिश्रा

लेजिस्लेटिव रिसर्च एजेंसी 'पीआरएस' की एक रिपोर्ट के अनुसार, 2018-19 में, राज्यों द्वारा केंद्र सरकार की तुलना में सार्वजनिक क्षेत्र में लगभग 72 फीसद अधिक खर्च करने की उम्मीद की गई थी। स्पष्ट है कि सार्वजनिक क्षेत्र में होने वाले खर्च के अधिकांश फैसले केंद्र के दायरे से बाहर हैं। ऐसे में ज्यादातर केंद्रीय योजनाएं, जैसे स्वच्छ भारत और स्मार्ट सिटीज मिशन, राज्य के अधिकारियों द्वारा वास्तविक कार्यान्वयन पर ही निर्भर करती हैं।

नौकरशाही को लेकर मोदी सरकार पहले से ही कुछ सकारात्मक उपायों की ओर प्रतिबद्ध है, जैसे नौकरशाही में पेशेवरों का प्रवेश एक स्वागत योग्य पहल है, हालांकि, इससे नौकरशाही की मानसिकता बदलने में ज्यादा मदद नहीं मिली है, इसके कुछ व्यावहारिक कारण हैं। पहला और प्रमुख कारण यह है कि पेशेवरों को निजी क्षेत्र में प्रदर्शन के आधार पर पुरस्कृत किया जाता है और यही उन्हें लीक से हटकर, सकारात्मक परिणाम पाने के लिए प्रोत्साहित करता है। प्रदर्शन आधारित प्रोत्साहन की अनुपस्थिति में, पेशेवर भी नौकरशाही के कामकाज करने के तरीके के अनुरूप ही काम करने लगते हैं और यहीं पर इस नए प्रयोग के विफल होने की आशंका बढ़ जाती है। ऐसे कई क्षेत्र हैं, जहां आमूल चूल परिवर्तन लाने की आवश्यकता है। हाल में आई विश्व बैंक की 2018 की कारोबार करने को सरल बनाने वाले रिपोर्ट में यह कहा गया है की जीएसटी फाइलिंग में लगने वाले समय में बढ़ोत्तरी हुई है। 2017 में कारोबारियों को कर अदायगी में लगने वाला समय लगभग 214 घंटे का था, जो 2018 में 275.4 घंटे का हो गया। इसी रिपोर्ट में विभिन्न पैमानों पर 'इन्सॉल्वेंसी ऐंड बैंकरप्सी कोड' के प्रभाव का अध्ययन किया गया है। दिवालियेपन की घोषणा के बाद कर्ज नहीं लौटाने की बढ़ती परंपरा में भारत 2017 में 103 वें पायदान पर था वहीं 2018 में भारत 108 वें पायदान पर आ गया। निस्संदेह सरकार के सकारात्मक इरादों के बावजूद, गलत और बेमन से क्रियान्वित सुधारों ने देश के कारोबारी माहौल को बिगाड़ा है।

केंद्र सरकार को न सिर्फ सब्सिडी जैसे संरक्षणवादी उपायों पर फिर एक गहन विचार करने की आवश्यकता है, बल्कि कुछ और मामलों में भी उदाहरण स्वरूप, 2016 के रियल एस्टेट (विनियमन और विकास) अधिनियम को भी दोबारा परखने की आवश्यकता है।

स्किल डेवलपमेंट मिशन के मामले में भी कई कमियां रही हैं, उद्योग जगत के साथ इस मामले में कंधे से कंधा मिलाकर बढ़ने की आवश्यकता थी, लेकिन ऐसा हुआ नहीं। नेशनल स्किल डेवलपमेंट कॉरपोरेशन की स्थापना का मूल उद्देश्य पब्लिक-प्राइवेट पार्टनरशिप को बढ़ाना और स्किल डेवलपमेंट में व्यापार जगत को जोड़ना था, लेकिन वास्तविकता यह है कि इस पूरे मिशन में सरकार की तरफ से लगभग 99 फीसदी फंड की भागीदारी रही जबकि इसकी फ्लैगशिप स्कीम में भी सिर्फ 12 फीसदी प्रशिक्षुओं को ही रोजगार मिला। हमें यह समझने की जरूरत है कि किस उद्योग का वृद्धि स्तर ज्यादा है और कौन से उद्योग में रोजगार की संभावना ज्यादा है। हम कौशल प्रशिक्षण के साथ-साथ फंड के मामले में भी उद्योग जगत को कॉरपोरेट सोशल रिस्पांसिबिलिटी के तहत अपने साथ जोड़ सकते हैं। इससे न सिर्फ प्रशिक्षण की गुणवत्ता में बढ़ोतरी होगी, बल्कि सरकार के वित्तीय दबाव में भी कमी आएगी।

बहरहाल, नीति आयोग में लगातार विशेषज्ञों की हो रहीं बैठकें इस सरकार के, अर्थव्यवस्था में नई जान फूंकने के समर्पण को दर्शाता है।

खुली खिड़की

सैन्य विमान

किसी भी देश की सेना में सैन्य विमानों का विशेष स्थान होता है। एक रिपोर्ट के मुताबिक वर्ष 2019 तक सबसे ज्यादा सैन्य विमान अमेरिका के पास मौजूद हैं।

स्रोत : ग्लोबल फायर पावर

वृद्ध का अनुभव

जर्मनी के सम्राट फ्रेडरिक यह जानकर बहुत चिंतित हो उठे कि उनके देश की आर्थिक स्थिति दिनोंदिन दयनीय होती जा रही है। उन्होंने एक दिन राज्य के कर्मचारियों को विचार-विमर्श के लिए बुलाया तथा उनसे पूछा कि राज्य के खजाने की आय कम होने का क्या कारण है? दरबार में यह प्रश्न उठते ही सन्नाटा छा गया तथा सभी एक दूसरे का मुंह देखने लगे। अचानक दूर बैठे एक वयोवृद्ध नागरिक ने कहा, सम्राट की आज्ञा हो, तो मैं इस प्रश्न का उत्तर देने को तैयार हूं। उस व्यक्ति ने मेज पर प्याले में रखे बर्फ के एक टुकड़े को उठाया तथा उसे अपने पास बैठे हुए एक व्यक्ति को देते हुए कहा, इसे अपने पास बैठे हुए व्यक्ति को दे दो। एक के बाद दूसरे के हाथों आगे बढ़ाते हुए इसे सम्राट के पास पहुंचाना है। देखते ही देखते बर्फ का टुकड़ा अनेक हाथों से होता हुआ सम्राट के हाथों में पहुंचा, तो उसका आकार चौथाई ही रह गया था। सम्राट ने पूछा, बर्फ का यह टुकड़ा यहां तक आते-आते इतना छोटा कैसे हो गया? वृद्ध ने समाधान करते हुए बताया कि बर्फ के टुकड़े की तरह प्रजा से वसूले गए कर की राशि भी सरकारी कोष तक पहुंचते-पहुंचते चौथाई रह जाती है। इतना सुनते ही सम्राट को अपनी शंका का समाधान मिल गया। उसी समय उन्होंने भ्रष्ट कर्मचारियों की छंटनी कर दी। कुछ ही दिनों में राज्य की आय भी बढ़ने लगी।

सत्संग

-संकलित

हरियाली और रास्ता

औरत, बूढ़ा और हीरा

एक बूढ़े की कहानी, जिसे एक औरत ने बताया कि बाहरी चीजों में खुशी ढूंढना व्यर्थ है।

एक खूबसूरत औरत समुद्र के किनारे टहल रही थी। एक बूढ़ा दूर एक पत्थर पर बैठकर उसे देख रहा था। औरत का चेहरा चमक रहा था। बूढ़े ने देखा कि समुद्र की लहरों के साथ हीरे जैसा कोई चमकदार पत्थर छोर पर आ गया। उस औरत ने वह पत्थर उठाकर अपने पर्स में रख लिया। लेकिन उसके हाव-भाव पर ज्यादा फर्क नहीं पड़ा। बूढ़ा अपनी जगह से उठा और औरत की तरफ बढ़ने लगा। औरत के पास जाकर बूढ़े ने कहा, मैंने पिछले चार दिन से कुछ भी नहीं खाया है। क्या तुम मेरी मदद कर सकती हो? औरत ने तुरंत अपना पर्स खोला और कुछ खाने को टटोलने लगी। उसने देखा कि बूढ़े की नजर उस पत्थर पर है, जिसे उसने अभी उठाया था। औरत पूरी कहानी समझ गई। उसने झट से वह पत्थर निकाला और बूढ़े को दे दिया। बूढ़ा एकदम भौंचक्का रह गया। उसने सोचा, कहीं उसे फंसाने के लिए इसमें औरत की कोई चाल तो नहीं। बूढ़े ने गौर से उस पत्थर को देखा। वह असली हीरा था। बूढ़ा सोच में पड़ गया। अगर यह असली हीरा है, तो इसने इतनी आसानी से मुझे कैसे दे दिया? वह औरत अपने रास्ते पर आगे बढ़ चुकी थी। अब भी उसके चेहरे पर कोई शिकन नहीं थी। बूढ़े ने एक बार फिर उस औरत को रोका और पूछा, क्या तुम जानती हो कि जो पत्थर तुमने मुझे दिया, वह एक बेशकीमती हीरा है? इसे पाकर तुम जिंदगी भर खुश रह सकती हो। औरत बोली, मुझे यकीन है कि यह हीरा ही है। लेकिन मेरी खुशी मेरे अंदर है। दौलत और शोहरत आती-जाती रहती है। अगर अपनी खुशी को इनसे जोड़ेंगे, तो आप कभी खुश नहीं रह पाएंगे। बूढ़े ने वह हीरा उसको वापस देते हुए कहा, यह हीरा तुम रखो और मुझे इससे कई गुना ज्यादा कीमती वह भाव दे दो, जिससे तुमने इतनी आसानी से यह हीरा मुझे दे दिया।

अपनी खुशी अपने अंदर ही ढूंढनी चाहिए, वह बाहर नहीं मिलेगी।